कुदरत की रचना

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

कुदरत को ब्रह्माण्ड कहते हैं। इसे संसार, सृष्टि आदि नामों से भी जाना जाता है। कुदरत को संचालित करने वाले छः द्रव्य हैं– धर्म, अधर्म, आकाश, काल, पुद्गल और जीव। गति में सहायक तत्व को धर्म कहते हैं। स्थिरता में सहायक तत्व को अधर्म कहते हैं। जो सबको अवगाहना देता है उसे आकाश कहते हैं। वर्तना को काल कहते हैं। काल अनुमेय है। रूप, रस, गन्ध, स्पर्श से युक्त तत्व को पुद्गल कहते हैं। पुद्गल जड़ पदार्थ है। यह चतुस्पर्शी और अष्टस्पर्शी होता है। चतुस्पर्शी नेत्र गोचर नहीं होता। जीव तत्व चेतन कहलाता है। असंख्य चेतन परमाणुओं के पिण्ड को चेतना कहा जाता है।

कुदरत की रचना बड़ी विचित्र है। इसे समझना और जानना बड़ा कठिन है। कोई इसे सत्य कहता है और कोई इसे मिथ्या कहता है। कुछ लोग इसे सत्य और असत्य दोनों कहते हैं। कुदरत के विभिन्न रूप हम देखते हैं। कहीं पर्वत की ऊँची–ऊँची श्रृंखलाएं हैं तो कहीं कलकल ध्वनि में बहती हुई नदियां। कहीं पर विशाल रेगिस्तान हैं तो कहीं पर हरे–भरे लहलहाती फसलों वाले मैदान। यह रचना बहुत ही अद्भूत है।

यह लौकिक जगत् पंचभूतात्मक है। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश से मिलकर इस कुदरत का निर्माण हुआ है। प्रकृति के मूल तत्व पांच ही हैं। इन्हीं पांच तत्वों से प्रकृति की संरचना हुई है। इनमें पहला तत्व पृथ्वी तत्व है। पृथ्वी के अनेक नाम हैं। पृथ्वी, धरा, वंसुधरा यह पृथ्वी रत्नों की खान है इसलिए इसको वसुंधरा कहा जाता है। वसुंधरा का तात्पर्य है जो रत्नों को धारण करे। पृथ्वी के गर्भ में न जाने कितने बहुमूल्य खनीज छिपे हुए हैं। मानव इनका अंधाधुध दोहन कर रहा है।

आवश्यकता से अधिक दोहन स्वयं उसके विनाश के लिए है। इससे पर्यावरण असंतुलित होता ही है, साथ ही साथ अनेक भौतिक आपदाओं के आने का भी डर बना रहता है। दूसरा

महत्वपूर्ण तत्व है जल। जल को जीवन कहा गया है। पीने के लिए शुद्ध जल धीरे–धीरे समाप्त होता जा रहा है। बढ़ती हई जनसंख्या और उससे होने वाला प्रदूषित मल–जल नदियों और तालाबों को विकृत बना रहा है। यदि प्रदूषण की गति इसी तरह जारी रही तो एक दिन ऐसा आयेगा कि पीने के लिए धरती पर पानी ही नहीं बचेगा। तीसरा विश्वयुद्ध जल के कारण ही संभव हो सकता है। इसलिए प्रकृति के इस तत्व को सुरक्षित रखना है। तीसरा महत्वपूर्ण तत्व है तेज या अग्नि। अग्नि एक महत्वपूर्ण तत्व है। अग्नि तीन प्रकार की है– दावाग्नि, वडवाग्नि और जठराग्नि। दावाग्नि जंगल में लगने वाली अग्नि है। वडवाग्नि समुद्र के जल को नियंत्रित करती है। जठराग्नि मनुष्य के शरीर में रहने वाली अग्नि है। इसी से मनुष्य का जीवन चलता है। यदि यह अग्नि नष्ट हो जाये तो मनुष्य का जीवन समाप्त हो जाये।

चौथा महत्वपूर्ण तत्व है– वायु। बढ़ती हुई आबादी और उसके सुख साधनों से निकलने वाला धुआं वायु को प्रदूषित कर रहा है। प्रदूषण की गति इसी अनुपात में बढ़ती रही तो एक दिन पूरी मानवता ही समाप्त हो जायेगी। शुद्ध हवा प्राणवायु है। शुद्ध प्राणवायु के बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। पांचवा महत्वपूर्ण तत्व– आकाश है। जो कुछ भी खाली स्थान दिखायी दे रहा है, वह आकाश तत्व है। इन्हीं पांचों तत्वों से मिलकर सृष्टि का निर्माण होता है और इन्हीं से पर्यावरण और प्रकृति बनी है। यदि प्रकृति सुरक्षित नहीं रहेगी तो मानव का इस संसार में जीवित रहना ही कठिन हो जायेगा। पृथ्वी हमारी माता है। जैसे माता अपने गर्भ में नौ महिने तक बच्चे का पालन–पोषण करती है और नौ महिने के बाद बच्चे को जन्म देकर बड़ा करती है, वैसे ही यह पृथ्वी माता सम्पूर्ण सृष्टि का संरक्षण करती है। माता के अनेक रूप है– लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा। लक्ष्मी के रूप में वह धन की अधिष्ठात्री देवी कहलाती है। माता घर में धन संचय करती है और परिवार का भरण पोषण करने में महत्वपूर्ण योगदान देती है। सरस्वती के रूप में बालक को शिक्षा देती है और उसे पढ़ा लिखाकर जीवन पथ पर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करती है। दुर्गा के रूप में राक्षसों का संहार भी करती है।

दैनिक पूजा पद्धति में पृथ्वी अग्नि वृक्ष इत्यादि को देवता मानकरके पूजा की जाती है। नदी, पहाड़, झरने इत्यादि हमारे लिए पूजनीय है। गंगा का जल अमृत है। इसे मृत्यु के समय

मरणशय्या पर पड़े हुए व्यक्ति के मुख में डालने से वह मोक्ष को प्राप्त हो जाता है ऐसी मान्यता है। हमारे देश में पहाड़ों की भी पूजा होती है, पत्थरों की भी पूजा होती है। पत्थर को मूर्ति रूप में ढ़ालकर प्राण प्रतिष्ठा कर जब मंदिर में स्थापित कर दिया जाता है तो वह पूजनीय बन जाता है। मानव से लेकर पत्थर तक की पूजा इस संस्कृति में की जाती है।

शरीर पंचतत्वों से बना हुआ है और इन पांचों तत्वों में किसी भी प्रकार का विकार आने पर मनुष्य अपने को अस्वस्थ महसूस करने लगता है। यदि प्रकृति के सहारे मनुष्य अपने जीवन को यापन करें तो प्रकृति स्वास्थ्य लाभ देने में सक्षम है। शारीरिक तंत्रों को सुव्यस्थित करना शारीरिक स्वास्थ्य कहलाता है। जब इन तंत्रों में असंतुलन आ जाता है तो मनुष्य अस्वस्थ हो जाता है। मानसिक स्वास्थ्य का संबंध हमारी विचार प्रणाली से है।